❋ ॐ ❋

गायत्री गायत्री

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्

श्री गुरुं परमानन्दं वन्दे स्वानन्द विग्रहम् ।
यस्य सान्निध्य मात्रेण चिदानन्दाय ते तनुः ॥

❋ श्री गुरु पूजोत्सव ❋

प्रकाशक—वंशीधर शास्त्री
श्री भगवद्भक्ति आश्रम रामपुरा, रेवाड़ी ।

॥ वेद मन्त्राः ॥

१. हिरण्यगर्भ सूक्त.....(८ मंत्र) ॥
२. ॐ नमो ब्रह्मणे नमस्ते वायो ॥
३. यज्ञेन यज्ञ मयजन्त देवाः ॥
४. वेदाहमेत मजरं पुराणं ॥
५. गमागमस्थं गमनादि शून्यं ॥
६. हंसो गणेशो विधिरेव हंसो ॥
७. हकारः शिव रूपेण सकारः ॥

॥ श्लोकाः ॥

१. श्री गुरुं परमानन्दं वन्दे ॥
२. वन्दे गुरूणां चरणारविन्दे सन्दर्शितः स्वात्म सुखाव बोधे निःश्रेयसे जांगलिकायमाने संसार हालाहल मोह शांतये॥

॥ आरती ॥

१. निरंजनं दुख भंजनं ॥
२. ॐ निरंजन ररंकार प्रभु ... सेः—
नमः शम्भवाय च ... तक ॥
३. राजा धिराजाय ॥
४. विश्वतश्चक्षुः ॥
५. जय जगदीश हरे ॥

(बैठकर)

॥ अष्टक-स्तोत्र ॥

१. श्री गुर्वष्टक ॥
२. गोविन्दाष्टक ॥
३. श्री परमानन्दाष्टक ॥

॥ चौपाई ॥

१. बन्दौं गुरु पद पद्म परागा ॥
२. बन्दौं गुरु पद नख मणि ॥
३. गुरु बिन ब्रह्म नहीं नर ॥
४. तन कि बहु सेवा विस्तारे ॥
५. जननि जनक गुरु बन्धु ॥
६. गुरु बिन भवनिधि तरे ॥
७. बन्दौं गुरु पद कंज ॥
८. सब धरती कागज करूँ ॥

॥ सन्तों के भजन ॥

१- मस्तक लाग रही म्हारे ॥
२- गुरु के समान नाहीं दूसरा ॥
३- हमारे गुरु ने दीन्हीं है ॥
४- गुरु सम दाता कोई नहीं ॥
५- मोरी लागी लटक गुरु ॥
६- मैं वारी जाऊँ सतगुरु की ॥
७- सन्गुरु मिले म्हारे सारे दुख ॥

॥ गुरु वाणी ॥

१- भजो रे मन शुद्ध सच्चिदानन्द ॥
२- ब्रह्म का है आनन्द स्वरूप ॥
३- हमारे प्रभु एक तुम्हीं ओंकार ॥
४- सुनो भाई साधो अक्षर पद ॥
५- तेरा यह खेल अपारा है जित ॥

५- म्हारे प्रेम विरह के बाण ॥
७- प्रभु मैं शरणागत तेरी निवारो ॥

॥ भक्तों के भजन ॥

१- हमारे गुरु ने दीन्हीं है ज्ञान ॥
२- उनके सत् संग में जब भी हम ॥
३- जय जय श्री परमानन्द ॥
४- रात दिन रहते मगन आनन्द ॥
५- रंगीले बाबा फिर से रंग ॥
६- सब प्रेम से मिल कर जय ॥
७- सत् चित आनन्द रूप तुम्हारा ॥
८- योगेश्वर गुरु देव दयामय ॥
९- हमारे गुरु पूरण परमानन्द ॥
१०- गुरु आप रूप भगवान हैं कोई ॥
११- लहरा रही है ज्योति चिदानंद की ॥

॥ ॐ पूर्णमदः पूर्ण मिदं ॥
॥ ॐ द्यौः शांतिरंतरिक्षम् ॥

॥ ऊपर– श्री गुरुं परमानंद के पांच श्लोक ॥

॥ रात का सत्संग– १- भजन गुरु सम्बंधी ॥
२- आरती: १-जय जगदीश
२-लहरा रही।

॥ ॐ द्यौः शान्तिः ॥